IJAER/ Jan-Feb 2023/Volume-12/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

हिन्दू समाज में लड़के और लड़कियों के दाम्पत्य जीवन पर मंगल दोष के प्रभाव का अध्ययन

अनुप्रिया(रिसर्च स्कॉलर),

ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान,(ज्योतिषसंकाय)

ग्लोकल विश्वविद्यालय, मिर्जापुरपोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

प्रो. (डॉ०) सुषमा रानी (रिसर्च सुपरवाइजर),

ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान (ज्योतिषसंकाय) ,

ग्लोकल विश्वविद्यालय, मिर्जापुरपोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

विषय कथन

फलित ज्योतिष की प्रत्येक शाखा, प्रशाखा भारी अन्तर्विरोधों का शिकार है, जिससे फलित की किसी भी शाखा पर शुचिता एवं प्रतिज्ञा पूर्वक फलादेश करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति भारी धर्मसंकट में फस जाता है। ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न लेखकों की रचनाओं ;संहिता–जातक–मुहूर्तसाहित्यद्ध का अध्ययन करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को पद–पद पर इतने स्पष्ट विरोधों का साक्षात्कार होता है कि वह इस शास्त्र की प्रमाणिकता को सन्देह की कोटि मे रखे बिना नहीं रह सकता। सुखद दाम्पत्य के लिए ज्योतिष में कुण्डली मिलान की यह शाखा भी ऐसे विरोधों से वंचित नहीं है। स्थानीय परम्पराओं के अनुसार भी 'मांगलिक योग' आदि का निर्णय करने में भारी मतभेद मिलता है।

प्रस्तावना

हिन्दू समाज में लड़के और लड़कियों की कुण्डली मिलातेसमय 'मंगली दोष' पर विशेष बल दिया जाता है। जातक के माता–पिता केवल यह सुनकर ही चिन्ता में पड़ जाते हैं कि उनका जातक मंगली है। इस मंगली दोष का अफवाह (हौआ) इतना भयानक होता है कि कुछ लोग यह पता लगने पर कि उनका जातक मंगली है, नकली जन्मपत्री बनवा लेते हैं। इसे 'कुज दोष' भी कहा गया है। इस प्रकार असंख्य सुन्दर, सुशिक्षित एवं स्वस्थ जातकों के विवाह में

मंगली दोष का अफवाह (हौआ) विरोध या विलम्ब उत्पन्न करता है।[1]

बृहतपाराशरहोराशास्त्रम्' के 82वें अध्याय'स्त्रीजातकाध्याय' में 47वें से 49वें श्लोक में लग्न से 1, 12, 4, 7 तथा 8 भाव में मंगल किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि से या योग से रहित हो तो इस योग में उत्पन्न स्त्री पतिहन्तृ होती है। इस योग में केवल मंगल की भावस्थिति का विचार करते हैं। ('श्लोक 47') जिस योग में उत्पन्न कन्या पति का हनन करती है, उसी योग में उत्पन्न पुरुष भी पत्नी का हनन करता है। पति हन्त्री कन्या का पत्नी हन्ता पुरुष के साथ विवाह होने से वैधव्य योग नष्ट हो जाता है। (श्लोक 48–49)

'लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे व अष्टमे कुजे।

शुभदृग्योग हीने च पतिं हन्ती न संशयः ।।

यस्मिन योगे समुत्पन्ना पति हन्ति कुमारिका।

तस्मिन योगे समुत्पन्नो पत्नीं हन्ती नरोपि च।।

स्त्री हन्ता परिणीता चेत् पति हन्त्री कुमारिका।

तदा वैधव्ययोगस्य भंगो भवति निश्चयात्।।[2] (श्लोक 47–49)

मंगली दोष : मंगली दोष तब माना जाता है, जब कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान में मंगल बैठा हो। लग्न में मंगल हो तो स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति स्वभाव से उग्र एवं जिद्दी होता

है। चतुर्थ स्थान में मंगल होने पर जीवन में भोगोपभोग की सामग्री की कमी रहती है। यहां स्थित मंगल की सप्तम स्थान पर दृष्टि पड़ती है, जो दाम्पत्य–सुख पर प्रतिकूल प्रभाव डालती ळें

सप्तम स्थान में स्थित मंगल दाम्पत्य–सुख (रति सुख) की हानि तथा पत्नी के स्वास्थ्य को भी हानि पहुंचाता है। इस स्थान में स्थित मंगल की दशम एवं द्वितीय भाव पर दृष्टि पड़ती है। दशम स्थान आजीविका का तथा द्वितीय स्थान कुटुम्ब का होता है। अतः इस स्थान में स्थित मंगल आजीविका एवं कुटुम्ब पर भी अपना प्रभाव डालता है। अष्टम स्थान में स्थित मंगल जीवन में विघ्न, बाधा एवं दम्पति में से किसी एक की मृत्यु भी कर सकता है। द्वादश स्थान में स्थित मंगल व्यक्ति की क्रयशक्ति (व्यय) को प्रभावित करने के साथ सप्तम भाव पर अपनी दृष्टि के द्वारा साक्षात् दाम्पत्य–सुख को भी प्रभावित करता है।[3]

इन पांच स्थानों में से लग्न, चतुर्थ, सप्तम एवं द्वादश स्थान में स्थित मंगल अपनी दृष्टि या युति से सप्तम स्थान को प्रभावित करने के कारण दाम्पत्य–सुख के लिए हानिकार माना गया है। अष्टम स्थान आयु का प्रतिनिधि भाव है तथा यह पत्नी का मारक (सप्तम से द्वितीय होने के कारण) स्थान होता है। अतः इस स्थान का मंगल दम्पति में से किसी एक की मृत्यु कर सकता है। इसलिए इस स्थान मेंभी मंगल की स्थिति अच्छी नहीं मानी गई। ज्योतिष शास्त्रमें इन पांचों स्थानों में से किसी एक स्थान में मंगल होने पर मंगल के पड़ने वाले दुष्प्रभाव को ही मंगली दोष कहा जाता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध के लिए निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध निम्न परिकल्पनाओं पर आधारित है कि –

- मांगलिक जातक का दाम्पत्य जीवन सुखद नहीं होता।

- पति–पत्नी में यदि एक जातक मांगलिक है तथा दूसरा जातक मांगलिक नहीं है तो दाम्पत्य जीवन सुखद नहीं होता।

प्रारूपों का सांख्यिकीय विश्लेषण व परिणाम

प्रस्तुत शोध में 1747 जातकों की जन्मकुण्डलियों का अध्ययन किया गया है। इन जातकों में 1252 जातकों का दाम्पत्य जीवन सुखद नहीं रहा। जिनमें 598 स्त्री जातक हैं तथा 654 पुरूष जातक हैं। सुखद दाम्पत्य जीवन के जातकों की संख्या 495 हैं। जिनमें 239 स्त्री जातक तथा

256 पुरूष जातक हैं।

सुखद दाम्पत्य जीवन तथा दुखद दाम्पत्य जीवन की जन्म कुण्डलियों में द्वादश भावों में मंगल की स्थिति की संख्या व उनका प्रतिशत निम्न तालिका में दर्शाया गया है :

तालिका 1

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
सुखद दाम्पत्य	35	46	54	58	32	41	50	42	45	38	35	38	**495**
%	7.09	9.28	10.99	7.68	6.46	8.27	10.13	8.56	9.04	7.62	7.07	7.86	
दुखद दाम्पत्य	96	90	114	98	114	122	108	111	124	103	75	97	**1252**
भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	**कुल**
%	7.62	7.20	9.28	7.84	9.12	9.78	8.55	8.81	9.96	8.23	5.95	8.28	

प्रथम तालिका का अध्ययन करने पर सभी दुखद दाम्पत्य के जातकों की जन्मकुण्डलियों में नवम भाव (9. 96:), षष्ठमभाव (9.78:), तृतीय भाव (9.28:) व पंचम भाव (9.12:), में मंगल का प्रतिशत प्रथम (7.62:), चतुर्थ (7.84:), सप्तम (8.55:), अष्टम (8.81:) व द्वादश (8.28:) भावों के प्रतिशत से अधिक रहा है। सुखद दाम्पत्य जीवन की जन्म कुण्डलियों में सप्तम भाव के मंगल का प्रतिशत सर्वाधिक रहा है। प्रथम भाव में सुखद दाम्पत्य जीवन (7.09:) व दुखद दाम्पत्य जीवन में (7.62:), चतुर्थ भाव में सुखद दाम्पत्य (7.68:) व दुखद

दाम्पत्य जीवन में (7.84:), सप्तम भाव में सुखद दाम्पत्य जीवन (10.13:) व दुखद (8. 55:), अष्टम भाव में सुखद (8.56:) व दुखद (8.81:) तथा द्वादश भाव में सुखद दाम्पत्य (7. 86:) व दुखद (8.28:) रहा है।

तालिका 2 (पुरूष जातक)

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
सुखद दाम्पत्य	23	25	22	19	17	22	24	16	27	22	18	21	**256**
%	8.98	9.77	8.59	7.42	6.64	8.59	9.38	6.25	10.55	8.55	7.03	8.20	
दुखद दाम्पत्य	56	45	54	50	57	59	66	66	57	53	44	47	**654**
%	8.56	6.88	8.26	7.65	8.72	9.02	10.09	10.09	8.72	8.10	8.73	7.19	

द्वितीय तालिका का अध्ययन करने पर सभी पुरूष जातकों की जन्म कुण्डलियों में जिनका दाम्पत्य जीवन दुखद रहा। मंगलसप्तम भाव (10.09:) व अष्टम भाव (10.09:) में सर्वाधिक रहा है। सबसे कम द्वादश भाव (7.19:) में मंगल की स्थिति का प्रतिशत रहा है। सुखद दाम्पत्य जीवन की जन्म कुण्डलियों में द्वितीय (9. 77:) भाव के मंगल का प्रतिशत अधिक रहा है।

प्रथम भाव में सुखद दाम्पत्य जीवन (8.98:) व दुखद दाम्पत्य जीवन में (8.56:), चतुर्थ भाव में सुखद दाम्पत्य (7.42:) व दुखद दाम्पत्य जीवन में (7.65:), सप्तम भाव में सुखद दाम्पत्य जीवन (9.38:) व दुखद (10.09:), अष्टम भाव में सुखद (6.25:) व दुखद (10. 09:) तथा द्वादश भाव में सुखद दाम्पत्य (8.20:) व दुखद (7.19:) रहा है।

तालिका 3 (स्त्री जातक)

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
सुखद दाम्पत्य	12	21	32	19	15	19	26	26	18	16	17	18	**239**
%	**5.02**	**8.79**	**13.39**	**7.95**	**6.28**	**7.95**	**10.88**	**10.88**	**7.53**	**6.69**	**7.11**	**7.53**	
दुखद दाम्पत्य	**40**	**45**	**60**	**48**	**57**	**63**	**42**	**45**	**67**	**50**	**31**	**50**	**598**
%	**6.69**	**7.53**	**10.03**	**8.03**	**9.53**	**10.54**	**7.02**	**7.53**	**11.20**	**8.36**	**5.18**	**8.36**	

ततृीय तालिका का अध्ययन करने पर सभी स्त्री जातको की जन्म कण्डलियो में जिनका दाम्पत्य जीवन दखुद रहा हो। मगं ल नवमभाव (11.20:),षष्टम भाव (10.54:) व ततृीय भाव (10.03:) अधिक व सबसे कम एकादश भाव (5.18:) व पथ्रम भाव म (6.69:) रहा हो। पथ्रम भाव मे सखुद दाम्पत्य जीवन (5.02:) व दखुद दाम्पत्य जीवन में (6.69:), चतुर्थभाव मे सखुद

दाम्पत्य (7.95:) व दखुद दाम्पत्य जीवन में (8.03:), सप्तम भाव में सखुद दाम्पत्य जीवन (10.88:) व दखुद (7.02:),अष्टम भाव में सखुद (10.88:) व दखुद (7.53:) तथा द्वादश भाव में सखुद दाम्पत्य (7.53:) व दखुद (8.36:) रहा हो।उपरोक्त तालिकाओं का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ है कि सुखद दाम्पत्य जीवन व दुखद दाम्पत्य जीवन के प्रतिशत में कोई विशेष अन्तर नहीं मिला है। अतः जन्म कुण्डली में अकेले मंगल की भावगत स्थिति न तो दाम्पत्य जीवन को दुःखमय बना सकती है और न ही सुखमय।

नीचे की तालिकाओं में मंगल की प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम व द्वादश भाव में स्थिति के कारण दाम्पत्य जीवन में होने वाले प्रभाव का प्रतिशत दिया जा रहा है :

तालिका 4 (कलु परिणाम)

भाव	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	अष्टम	द्वादश
सखुद दाम्पत्य	7.9%	7.68%	10.13%	8.56%	7.86%
दुःखद दाम्पत्य	7.62%	7.84%	8.55%	8.81%	8.28%

तालिका 5 (परिणाम परुुष जातक)

भाव	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	अष्टम	द्वादश
सखुद दाम्पत्य	8.98%	7.42%	9.38%	6.25%	8.20%
दुःखद दाम्पत्य	8.56%	7.65%	10.09%	10.09%	7.19%

तालिका 6 (परिणाम स्त्री जातक)

भाव	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	अष्टम	द्वादश
सखुद दाम्पत्य	5.02%	7.95%	10.88%	10.88%	7.53%
दुःखद दाम्पत्य	6.69%	8.03%	7.02%	7.53%	8.36%

उपलब्धि : पुरूष जातकों की जन्मकुण्डलियों में मंगल द्वितीय, नवम व सप्तम भाव में शुभ तथा पंचम व अष्टम भाव मेंअशुभ होता है। स्त्री जातकों की जन्म कुण्डलियों में तृतीय, सप्तम व अष्टम भाव का मंगल शुभ तथा षष्टम व नवम भाव का मंगल अशुभ होता है।

संदर्भ–सूची

1- डॉ. शुकदेव चतुर्वेदी, दाम्पत्य सुख, पृ. 119

2. टीकाकार पं. पद्मनाभ शर्मा, 'बृहतपाराशरहोराशास्त्रम्', पृ. 600–601

3. डॉ. शुकदेव चतुर्वेदी, दाम्पत्य सुख, पृ. 119–120

4. व्याख्याकार, डॉ. भोजराज द्विवेदी, 'आचार्य वराहमिहिर का ज्योतिष में योगदान', पृ. 23

5. व्याख्याकार, डॉ. भोजराज द्विवेदी, 'आचार्य वराहमिहिर का ज्योतिष में योगदान', पृ. 48

6. व्याख्याकार, श्री अभय कात्यायन, 'श्री नारदीय ज्योतिष संहिता', पृ. 3., चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

7. नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्योतिष, पृ. 18

8. नेमीचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्योतिष, पृ. 19–20

9. शशिनाथ झा, ज्योतिषतत्त्वविमर्श, ज्योतिषतत्त्वांक, कल्याण, वर्ष 88, पृ. 153

10. डॉ. भोजराज द्विवेदी, आचार्य वराहमिहिर का ज्योतिष में योगदान, पृ. 17, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

11. नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्योतिष, पृ. 17, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

12. नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्योतिष, पृ. 17, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली